RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

मीडिया मीमांसा का गूढ़ार्थ : आध्यात्मिक सम्प्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका -अहिंसक जीवन शैली के संबंध में एक सामाजिक विश्लेषण

मेधावी शुक्ला

अनुसंधान अध्येता, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 January 2019

Keywords
अहिंसक जीवन शैली, शांति, अहिंसा

ABSTRACT

प्रस्तुत्त शोध आलेख में अहिंसक जीवन शैली के व्यावहारिक पक्षों का सामाजिक विश्लेषण करते हुए स्पष्ट किया गया है कि जीवन में जब हम स्वयं के सकारात्मक परिवर्तन का स्वरुप गढ़ने का प्रयास करते हैं तब एक मनुष्य होने के नाते हमें यह आभास होता है कि स्वयं के लिए सामाजिक जीवन में शांति , अहिंसा का क्या महत्व है । सामाजिक जीवन को नई दिशा प्रदान करने में धर्म की सम्मति एवं आध्यात्मिक चेतना का कितना महत्व है यह बात राजयोग की उपादेयता से पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है । अब प्रश्न उठता है कि एक मनुष्य के लिए समाज में सुख , शांति एवं आनंद को बनाए रखने के लिए अहिंसक जीवन शैली का किस स्तर पर उपयोग किया जाना अनिवार्य है क्योंकि अहिंसा परमो धर्म: एक कथनीय अभिव्यक्ति के साथ धारणा मूलक विचार भी है जिसे व्यक्ति धर्म कर्म की अभिव्यक्ति से अन्तःकरण को समझने का प्रयास करता है । व्यक्ति अध्यात्म के सहारे अपने स्वमान को जागृत करते हुए इस प्रकार से पुरुषार्थ करता है कि उसका आध्यात्मिक जगत किसी भी स्थिति में आत्मा के स्वमान को अखंड बनाए रख सकें ।अहिंसक जीवन शैली में राजयोग का अवदान अपनी परम्पराओं को इस प्रकार से अक्षुण्य बनाए रखता है ताकि राजयोग के स्वरुप का सही मूल्यांकन करना संभव हो सके । वर्त्तमान परिवेश में जब हम सम्प्रेषण की बात करते हैं तो एक दृष्टि में सब कुछ संप्रेषित कर दिया जाए इस बात का मानसिक तनाव और दबाव सम्प्रेषणकर्त्ता के ऊपर सामान्यतः होता है । दैनिक आपाधापी के बीच जो कुछ घटित हुआ अथवा संभावित परिणाम के पक्ष एवं विपक्ष में वह अपनी बेबाक टिप्पणी से समाज के सम्मुख अतीत , आगत एवं अनंत का ऐसा ख़ाका प्रस्तुत्त करता है जिससे उसकी क्रियाशीलता सामाजिक सक्रियता के सम्मुख अभिव्यक्ति के नित - नूतन आयाम को प्रस्तुत कर सके ।इस शोध आलेख में इस बात की पुष्टि की गयी है किमर्यादित सम्प्रेषण सामान्य तौर पर जीवन की विडंबनाओं से मुक्त रहता है और सामाजिक स्वीकृति के संदर्भ में इसे अत्यधिक ऊँचा ओहदा प्राप्त होता है । आध्यात्मिक सम्प्रेषण और मीडिया मीमांसा का गूढ़ार्थ इस बात पर बल देते हैं कि आध्यात्मिक जगत की ऊँचाई मानव जीवन - शैली को उसकी श्रेष्ठता से परिचित कराती है तथा अहिंसक जीवन जीने के लिए निरंतर प्रेरणा प्रदान करने का कार्य करती है जिससे आध्यात्मिक सम्प्रेषण में श्रेष्ठ जीवन शैली को स्वीकृत करते हुए सामाजिक उत्कृष्टता के प्रसंग में प्रतिपादित किया जा सके । धर्म ,अध्यात्म एवं राजयोग के संदर्भ को जब आध्यात्मिक सम्प्रेषण द्वारा समाज में परोसा जाता है तब मीडिया मीमांसा द्वारा धर्म - कर्म की महानता , अध्यात्म - पुरुषार्थ की वास्तविकता एवं राजयोग मौन की उपयोगिता को उसकीस्वाभाविक विशेषताओं के साथ इस प्रकार से विश्लेषित किया जाता है कि आम जन को इस बात की तहकीकात करने की गुंजाईश हो कि - आध्यात्मिक जगत की सम्पूर्ण प्रस्तुतियां क्या मानव जगत की धारणात्मक गतिशीलता को प्रमाणित करती हैं ? यदि हाँ तो वह कौन - सी स्मृतियाँ हैं ? जिससे मानव - समाज अपनी स्थिति को श्रेष्ठता के पायदान पर पहुंचा सकता है ।

सम्प्रेषण आधारित जीवन और मीडिया में राजयोग :

अहिंसक जीवन शैली में राजयोग का अवदान , मानव जीवन शैली की गतिशीलता का एक अनिवार्य पक्ष है जिसे राजयोग , एक ऐसा स्थायित्व प्रदान करता है कि व्यक्तिगत जीवन में अहिंसक जीवन शैली की उपादेयता मनुष्य को विचार एवं भावनाओं तक सीमित नहीं रखती है बल्कि उसे श्रेष्ठ जीवन शैली अपनाने में भी मददगार साबित होती है क्योंकि आत्मिक स्थिति का संबंध परमात्म शक्ति के साथ जुड़ने के कारण अहिंसा के विराट पक्ष पर कार्य करना मनुष्य के लिए आसान हो जाता है ।सम्प्रेषण आधारित व्यवस्था में जो कुछ घटित है अथवा अतीत में जो घटा है उसे संदर्भ सहित विश्लेषित करना तथा भविष्य की संभावनाओं को टटोलते हुए जो कुछ भी आकड़ों के माध्यम से भूत एवं वर्त्तमान के मध्य एक ऐसा सामंजस्य बैठाया जाता है ताकि भविष्य की अनुमानित परिकल्पनाओं को समाज के सम्मुख रखा जा सके । यह बात सही है कि मनुष्य जीवन की रफ़्तार बढ़ी है तथा सूचनाओं का अम्बार मीडिया के द्वारा संप्रेषित भी हुआ है तथा जो कुछ हो रहा है उस सच को अति शीघ्र प्रस्तुत्त करने की होड़ ने मीडिया की बैचेनी को बढ़ावा दिया है तथा मीडिया की स्थित्ति उसकी तनाव ग्रस्त मन:स्थिति के साथ स्वीकार होते हुए अग्रसर हो रही है । जीवन की गतिशीलता में लाभ-हानि, जीवन - मरण , यश - अपयश से जुड़ी घटनाओं का प्रस्तुत्तीकरण अत्यधिक तीव्रता से होने के कारण पाठक एवं दर्शक के मध्य एक द्वंदात्मक स्थिति का निर्माण हो गया है । एक पाठक बनकर स्वयं को यह मौका देना कि जो कुछ मीडिया के द्वारा संप्रेषित किया जा रहा है वह सब कुछ जैसा है वैसा ही स्वीकार कर लिया जाए और अत: करण में उपजे सवालों के प्रतिउतर में अत्यधिक सोच अथवा चिंतन की बजाए अतिशीघ्र घटनाओं को सुनकर एवं देखकर यह अनुभव किया जाए कि अलग - अलग माध्यमों से एक ही घटना बहुआयामी स्वरुप से जब मन , मस्तिष्ककी ओर तीव्रता से आती है तो एक मनुष्य होने के कारण स्वयं के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अस्तित्व पर कितने निशान पड़ जाते हैं इसका अंदाज़ा लगाना बड़ा कठिन होता है।

जीवन की प्रक्रिया में सूचनाओं की तीव्रगति मनुष्य के मन को इस प्रकार से विचलित करती है कि किसी व्यक्ति ,घटना , विचार एवं भावना का आहत स्वरुप स्थानीयता के संदर्भ से गुजरता हुआ विश्व परिदृश्य में जब प्रभावशीलता अथवा प्रेरणा की प्रासंगिकता से दो चार होते हुए मानव मन उद्धेलित होता है तब उसे लगता है कि जीवन की रफ़्तार में सूचनाओं का दबाव आंकड़ों के रूप में व्यक्तिगत जीवन के लिए कितना आवश्यक ? कितना उपयोगी तथा भविष्य की धरोहर के रूप में संकलित की गई सूची अथवा किसी अनुक्रम का उल्लेख अति लघु रिपोर्टिंग के साथ निष्पक्ष टिप्पणी के रूप में अथवा मौलिक आलेख के रूप में किसी पाठक की स्वीकारोक्ति के संदर्भ में प्रस्तुत्त होता है तब उस विषय से संबधित शोध आलेख तथा शोध - पत्र की सच्चाई एवं गुणात्मकता अध्ययनशील व्यक्तियों के लिए अति महत्वपूर्ण हो जाती है । मानव जीवन के नियमित अनुक्रम में अच्छा , बुरा , आलोचना युक्त किसी ख़ास मुद्दे पर किसी की बेबाक एवं त्वरित टिप्पणी कितनी आकर्षित करती है अथवा वह स्वयं को किसी विषय सामग्री की वास्तविक निर्वचन प्रक्रिया के साथ कितना जोड़ पाती है यह मीडिया के लिए एक चुनौती का विषय हो सकता है।

मीडिया के द्वारा स्वयं को विधिवत तरीके से अनुशासन के विविध पक्षों का ध्यान रखते हुए सूचनाओं की आम - जन को उनकी आवश्यकता एवं इच्छा के अनुरूप पूर्णत: वर्गीकरण समाचारों के साथ जब तथ्यगत एवं कथ्यगत स्थितियों की विवेचना की जाती है तब ऐसा प्रतीत होता है कि एक पाठक एवं दर्शक के रूप में क्या कुछ प्रस्तुत्त किया जाना न्याय संगत होगा ? प्रस्तुत्तीकरण की प्रक्रिया में आध्यात्मिक सम्प्रेषण और मीडिया मीमांसा के गूढ़ार्थ को जब पूर्ण सकारात्मकता के साथ स्वीकार कर लिया जाता है तब मीडिया में राजयोग की सार्थकता स्वमेव परिलक्षित होने लगती है जो किसी भी लोकतान्त्रिक समाज के लिए एक चोथे स्तम्भ के रूप में उतनी ही प्रासंगिक होती है जितनी की व्यवस्थापिका , कार्यपालिका एवं न्यायपालिका का स्वरूप समाज में अनिवार्य हस्तक्षेप को सुनिश्चित करता है।

धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के महत्व का सम्प्रेषण :

सम्प्रेषण आधारित व्यवस्था में मानव जीवन , अति संवेदनशील व्यवहार का प्रस्तुत्तीकरण मीडिया के लिए एक महत्वपूर्ण अनिवार्यता बन गयी है । मानव जीवन की आवश्यकता का संज्ञान लेकर जब प्रस्तुतीकरण के विविध आयाम के साथ धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के महत्व को नियमित अथवा निर्धारित दिवस के रूप में अथवा साप्ताहिक प्रस्तुत्तीकरण का स्वरुप वर्त्तमान मीडिया व्यवस्था में मनुष्य के व्यक्तिगत संतुष्टि का कारक बना हुआ है जिसे धीरे - धीरे सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा स्वीकार किया जाने लगा है।समाज में शांति एवं अहिंसा की स्थितियां सदैव बनी रहें और धर्म अध्यात्म, एवं राजयोग का योगदान निरंतर होता रहे इस अभिलाषा से अभिभूत होकर मीडिया अपने प्रस्तुत्तीकरण में धर्म , अध्यात्म और राजयोग से सम्बंधित कॉलम अथवा पृष्ठ के अंतर्गत विधिवत रूप से प्रस्तुत्त करना चाहता है लेकिन तीव्र गति से होते सामाजिक अवमूल्यन के कारण यह तय करना कई बार मीडिया के सामने चुनौती बन जाती है कि आखिर इस प्रकार के प्रस्तुत्तीकरण के बावजूद भी सकारात्मक परिवर्तन की स्थितियां समाज में क्यों दिखाई नहीं देती हैं इसके बाद भी मीडिया के प्रयास जारी हैं।

अब प्रश्न उठता है कि सम्प्रेषण आधारित व्यवस्था के अंतर्गत धर्म से जुड़े जितने भी कर्मकांड हैं क्या उनके घटित अथवा फ़लित स्वरुप को जो है , जैसा है , इन समस्त स्थितियों को अगर हूबहु प्रस्तुत्त कर दिया जाता है तो क्या ये समाज में एक नयी दिशा देने में कारगर सिद्ध हो सकती हैं ? मीडिया के द्वारा अध्यात्म के प्रस्तुत्तीकरण के मुद्दे पर केवल यह सोच लिया जाए कि आत्मा का अध्ययन किया जाएगा तब किसी इन्सान के क्रियाकलापों का विश्लेषण आध्यात्मिक सक्रियता के संबंध में होगा क्योंकि इस प्रकार की गतिविधि में पुरुषार्थ का अनुपालन नैसर्गिक रूप से हो जाएगा यह केवल एकपक्षीय मान्यता का प्रतिफल हो सकता है।मीडिया द्वारा ' स्व - नाम - धन्य ' के संबंध में प्रस्तुत्त विचारधाराएं केवल शब्दों का विश्लेषण अथवा किसी वाक्य रचना का मात्र संधि -विच्छेद नहीं है जिसे केवल बाह्य दृष्टि से देख लिया जाए और प्रस्तुत्त कर दिया जाए ।जब किसी सच्चाई का सत्यनिष्ठा के साथ विश्लेषण किया जाता है तब एक मनुष्य को इस बात का बोध होता है कि एक सच केवल शब्दों की संरचना नहीं है बल्कि मनुष्य द्वारा आत्मिक अंतर्दृष्टि की परिणिति है जिसे बोध आधारित व्यवस्था के माध्यम से मानवीय स्मृति एवं आत्मिक स्थित्ति के पश्चात् आत्मा की श्रेष्ठ अवस्था और भविष्य में उच्च स्वरुप की प्रप्ति का एक गहन अनुसंधान है जो धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के महत्व का जीता जागता प्रमाण है।

अहिंसक जीवन शैली के प्रति सामाजिक स्वीकृत्ति :

आध्यात्मिक सम्प्रेषण से जुड़ी प्रचलित मान्यताएं मीडिया मीमांसा के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करने में सक्षम होती हैं जिसके प्रमाण अहिंसक जीवन शैली के प्रति सामाजिक स्वीकृत्ति के द्वारा समय - समय पर प्राप्त होते रहते हैं । संचार से जुड़ी हुई मानव जीवन की रफ्तार को वर्त्तमान परिवेश में रोकना असंभव सा प्रतीत होता है लेकिन मानव जीवन शैली की सम्पूर्ण व्यवस्था को देखने के पश्चात् मीडिया द्वारा यह तय किया जाना अधिक उपयोगी प्रतीत होता है जिसमें अल्प विराम , पूर्ण विराम , प्रश्न वाचक स्थितियां तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन के साथ सकारात्मक पक्षों को विश्लेषित करने का नज़रिया सामाजिक परिदृश्य में अवश्य ही सराहनीय कदम हो सकता है । यदि मीडिया मीमांसा के संदर्भ एवं प्रसंग को आदर के साथ समाज स्वीकार कर लेता है तो सम्प्रेषण आधारित व्यवस्था में इस बात की गुंजाईश होने लगती है कि - ' अहिंसक जीवन शैली ' के प्रति सामाजिक आस्था को विकसित करने में मदद की जानी चाहिए ।संचार माध्यम जब किसी सामाजिक मुद्दे के प्रति अपनी पड़ताल आरंभ करते हैं तो उनकी पेशेवर प्रणाली निष्पक्षता के उच्च आयाम पर स्थापित रहती है । मीडिया से जुड़े यथार्थ सत्य के इतने नज़दीक होते हैं कि स्वयं की परवाह किए बिना भूत , वर्तमान एवं भविष्य के ओर - छोर पर पहुंचकर विश्राम करने की कवायत उन्हें एक जिज्ञासु की भांति अन्वेषण के लिए इतना उद्देलित कर देती है कि वे स्वयं को समर्पित करते हुए सत्य को उसके विभिन्न स्वरुप में प्रस्तुत्त करने में सक्षम सिद्ध हो जाते हैं ।किसी भी लोकतान्त्रिक राष्ट्र में हिंसा के विरुद्ध अपनी पैठ बनाने और अहिंसा को स्थापित करने के लिए जीवन को इस प्रकार से अर्पित कर दिया गया कि

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दिवस के आरंभ में जो संकल्प लिया वह रात्रि के अंतिम पहर तक परिणाम में बदल गया जिसकी परिणिति दीर्घकालीन स्थितियों तक समाज को हिंसा के वृहद् पक्षों से छुटकारा प्राप्त हो गया और सुबह की रोशनी में समाज ने ' अहिंसक जीवन शैली ' के न्यूनतम आयामों को पुष्पित और पल्लवित होते हुए स्वीकार कर लिया। अहिंसक जीवन शैली के प्रति सामाजिक स्वीकृत्ति आदिकाल से रही है यदि कहीं किसी अनहोनी ने सामाजिक व्यवस्था में जन्म लिया है तो वह व्यवस्थागत सम्प्रेषण प्रणाली के दोष के कारण हुआ है क्योंकि जब - जब मीडिया अपने धर्म - कर्म के साथ गतिशील रहा है उसने समाज को अहिंसक जीवन शैली का आईना दिखाया है और समाज ने आभार युक्त स्वीकृति को अत्यंत सहज ढंग से संप्रेषित भी किया है जिसके कई कारण आज भी इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज हैं।

भक्ति - भावना एवं आध्यात्मिकता का प्रस्तुत्तीकरण :

जनसंचार माध्यमों का अधिकाधिक सद्पयोग हो सके इसके लिए मानव समाज के जागरूक नागरिकों द्वारा अपनी कर्तव्यपरायणता से जीवन की तीव्र रफ़्तार में भक्ति - भावना की आहूति देने की जिम्मेदारी को पूरी तन्मयता के साथ पूर्ण करना हमारा सामाजिक दायित्व होना चाहिए ।कई बार किसी धार्मिक अथवा आध्यात्मिक विचार को एक सामान्य ख़बर की भांति जब प्रस्तुत्त कर दिया जाता है तब उस विचार को समाज द्वारा स्वीकार किया जाना कठिन हो जाता है क्योंकि इस प्रस्तुत्तीकरण में भक्ति एवं भावना प्रधान स्थितियों की विवेचना आंकड़ों के संज्ञान एवं तर्कों के विश्लेषण द्वारा अपने कर्म को शीघ्रता से अंजाम तक पहुँचाने में केवल एक मानसिक जद्दोजहद ही कार्य कर पाती है।

आध्यात्मिक सम्प्रेषण अपने व्यावहारिक स्वरुप में जनसंचार के अलग - अलग माध्यमों द्वारा आम - जन के नज़दीक जब पहुँचता है तब उसमें संतुष्टि एवं सटीक जानकारी वह भी पूर्ण उपयोगिता के साथ प्राप्त होना मुख्य बिंदु होता है ।मीडिया की मीमांसा और उसके गूढ़ार्थ जब अपनी शक्ति के साथ गंभीरता एवं चिंतन परखता को विश्लेषित करते हैं तो कई बार सत्य एवं असत्य के मध्य द्वंदात्मक स्थितियां बन जाती हैं और पाठक एवं दर्शक को यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि जिस ' अहिंसक समाज की संरचना ' के लिए मीडिया की भूमिका अपने मानदंडों पर कार्य कर रही है वह आखिर कहाँ तक भक्ति - भावना एवं आध्यात्मिक - विचार के प्रस्तुत्तीकरण में सफल हो पाएगा ।

उपसंहार (निष्कर्ष) :

इस प्रकार सम्प्रेषण आधारित व्यवस्थाएं जब - जब अपने लघु - दृष्टिकोंण से संचालित होती हैं तब - तब केवल जो हो रहा है उसे ही बताने अथवा दिखाने का दावा किया जाता है लेकिन जैसे ही संचार माध्यम अपने दृष्टिकोंण को वृहद् बनाने का प्रयास करते हैं तब - तब समाज में क्या होना चाहिए और क्यों होना चाहिए तथा मानवीय मूल्यों का हमारा सामाजिक इतिहास , धार्मिक इतिहास और उसकी समृद्धि से जुड़े पक्षों को उकेरना मीडिया की जिम्मेदारी एवं जवाबदेही का समाज में श्रेष्ठतम उदाहरण बन जाता है ।सम्प्रेषण आधारित जीवन की रफ़्तार को स्वीकार करते हुए मीडिया ने आध्यात्मिक सम्प्रेषण के प्रति अपनी निष्ठा को अत्यंत ही समादर भाव से प्रस्तुत्त किया है तथा धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के महत्व को समाज में स्थापित करने का जो बीड़ा उठाया है वह प्रशंसनीय है ।अहिंसक जीवन शैली के प्रति मीडिया द्वारा आस्था प्रकट करना इस बात का प्रमाण है कि समाज द्वारा जब अहिंसा परमो धर्म: को आदर प्रदान किया जा रहा हो तो उस स्थिति में मीडिया केवल हिंसात्मक गतिविधियों से जुड़े समाचार एवं उसके विश्लेषण तक ही अधिकतम कवरेज़ को महत्व प्रदान करे यह अब मीडिया और समाज दोनों के लिए चिंता का विषय बन गया है ।आध्यात्मिक सम्प्रेषण के द्वारा जन मानस के भीतर भक्ति - भावना एवं अध्यात्मिक विचार का प्रस्फुटन हो जाए इसके लिए मीडिया की कवायत सकारात्मक जीवन के साथ सार्थक जीवन बनाने के प्रति अहिंसक विचार को मानव जीवन शैली से जोड़कर प्रस्तुत्त करना अब धीरे - धीरे मीडिया का धर्म - कर्म बनता जा रहा है यह लोकतंत्र के लिए एक शुभ संकेत का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मेहता , अलोक (2011) भारत में पत्रकारिता , प्रकाशक : नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ़ , इंडिया , नई दिल्ली।
2. द्विवेदी , आशीष (2011) राष्ट्रीय दायित्व और हिंदी पत्रकारिता , प्रकाशक : इंक मीडिया पब्लिकेशन , सागर (म.प्र.)
3. वडनेरे , सोमनाथ (2018) पत्रकारिता तथा मीडिया सेवा के बदलते आयाम , प्रकाशक : निर्मल मीडिया पब्लिकेशन , जलगाँव (महाराष्ट्र) ।
4. भानावत , संजीव (अगस्त – सितम्बर 2018) कम्युनिकेशन टुडे , प्रकाशक : पोपुलर प्रिंटर्स , जयपुर , (राजस्थान) ।
5. सिंह , सोना (2009) विकास संचार अवधारणाएं एवं प्रारूप , प्रकाशक : आशा पब्लिशिंग कंपनी , आगरा (उ.प्र)
6. शर्मा , सुरेश (2011) प्रभाष पर्व , प्रकाशक : राज कमल प्रा.लिमिटेड , नई दिल्ली।
7. कुशवाहा , रमाशंकर (2017) लोक का प्रभाष , प्रकाशक : राज कमल प्रा.लिमिटेड , नई दिल्ली।
8. रमण , महर्षि (2014) *उपदेश सार* , स्वामी अनुभवानंद , भोपाल , प्रकाशक ; इंद्रा पब्लिशिंग हाउस ।
9. विदेहत्मानंद , स्वामी (2002) *स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान*, कोलकाता ,अद्वैत आश्रम (प्रकाशन विभाग)
10. रंजन , राजीव (2012) युगदृष्टा विवेकानंद , दिल्ली , प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन ।
11. शर्मा , ए . आर . के (2013) स्वामी विवेकानंद के नेतृत्व सूत्र , नागपुर (महाराष्ट्र) प्रकाशक ; श्री शारदा बुक हाउस।
12. वैकटरामैया , मु. (1998) *श्री रमण महर्षि से बातचीत*. आगरा: प्रकाशक शिव लाल एड अग्रवाल कंपनी , आगरा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

13. लॉक , जॉन (1981) ' *मानव बोध* ' , जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी , प्रथम संस्करण ।
14. शर्मा , पंडित श्री राम (1998) *वाड्मय , साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान*,मथुरा प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान।
15. भावे , संत विनोवा (1978) *गीता प्रवचन,* वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ,* राजघाट।
16. भावे , संत विनोवा (2014) *स्थितप्रज्ञ - दर्शन* , वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ,* राजघाट।
17. भावे , संत विनोवा (1980) *उपनिषदों का अध्ययन* , वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ,* राजघाट।
18. गाँधी , महात्मा (2013) *अहिंसा की ताकत* , वाराणसी , सर्व सेवा संघ - प्रकाशन ।
19. गाँधी , महात्मा (1975) *सत्य के प्रयोग , आत्मकथा,* अहमदाबाद , प्रकाशक ; नवजीवन प्रकाशन मंदिर ।
20. गाँधी , महात्मा , *सत्य ही ईश्वर है* (1983) अहमदाबाद , प्रकाशक ;नवजीवन प्रकाशन मंदिर ।
21. हसीजा ,जगदीश चंद , योग की विधि और सिद्धि , प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय , माउन्ट आबू ।
22. भगेरिया , दामोदर : (2012) ' श्रीमदभगवद्गीता मर्म और सन्देश ' जयपुर , प्रकाशक ; गीता से जुड़ें।
23. पांडेय , पुष्पा (2012) श्रीमदभगवद्गीता का सत्य सार , जबलपुर (म . प्र.) , प्रकाशक ; बाबा पब्लिकेशन ।
24. जोशी , रजनीकांत (2004) जीवन - मीमांसा , अहमदाबाद (गुजरात) , अमृता प्रकाशन ।
25. शुक्ल, अजय (2009)व्यवहार ,संबंध और व्यावहारिकता , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
26. शुक्ल , अजय (2010) परिवर्त्तन की अंतर्दृष्टि , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
27. शुक्ल , अजय (2011)विकास का मनोविज्ञान , भोपाल (म. प्र.) , प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
28. शुक्ल , अजय (2012)जीवन के सृजनात्मक पक्ष, भोपाल (म. प्र.) , प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved